RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

पनिका जनजाति में सामाजिक व आर्थिक संगठन के बदलते प्रतिमान का मानव शास्त्रीय मूल्याकंन

राम सिंह
पी.डी.एफ.
मानव विज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

जन जातियों का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि यहाँ की मानव सभ्यता का। देश के प्रायः प्रत्येक भाग में ये जन जातियाँ किसी न किसी रूप में पायी जाती है। भारत में आर्यो के आगमन के समय भी यहाँ की आदिम जातियों की एक उन्नत सभ्यता एवं संस्कृति थी ,और साथ ही साथ उनकी एक विशिष्ट पहचान। इसमें वे सभी जातियाँ शामिल हैं, जिन्हें आज हम वनवासी, आदिवासी, गिरिजन, कबीले, आदिम जाति, व जनजाति आदि के रूप में चिन्हित करते है। इनके पूर्वजों ने आर्यो से डटकर मुकाबला किया, किन्तु उनकी उन्नत सामरिक शक्ति के आगे ये टिक नहीं सके, और दुर्गम पर्वतों एवं वनों में इन्हें शरण लेनी पड़ी।

प्रस्तुत शोध–पत्र उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली पनिका जनजाति के अध्ययन पर आधारित है यह जनजाति प्रायः शहरी सभ्यता से बहुत दूर गहन जंगलों के अंधेरे कोने में छोटी–बड़ी पर्वत क्षेत्रियों पर एवं उनकी तलहटियों में तथा पहाड़ी क्षेत्रों जैसे दुर्लभ जगहों में जीवन निर्वाह कर रही है और प्रत्येक अर्थ में अत्यधिक पिछड़ी हुयी है। इनके पिछड़नेपन पर विचार करते हुए अन्य जातियों की तरह भारत सरकार द्वारा 2002 में अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया है (शेड्ल्कास्ट एण्ड़ शेड़य्यूलेड़ ट्राइब आर्डर एमेण्डमेंट एक्ट–2002)। यह जनजाति मिर्जापुर तथा सोनभद्र जनपद मे निवास करती है। लेकिन इस जनजाति का सर्वाधिक संकेन्द्रण सोनभद्र जनपद की दुद्वी तहसील अन्तर्गत पाया जाता है।

सोनभद्र सोनांचल की सरजमी कई मायनों में अपनी विशिष्टता के कारण प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे देश के मानचित्र में भी कोहिनूर की मानिद दैदित्यमान है। अपनी खनिज सम्पदाओं के कारण प्रदेश में तो इसका स्थान अद्वितीय है ही साथ ही ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में भी देश के अंग्रणी जनपदों में प्रथम पायदान पर मानी जाती है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासतें अपने आप में अनूठी सामग्रियों को समेटे हुए हैं। सोनांचल की भौगोलिक दुरूहता अन्य लोगों के लिए भले ही खले, लेकिन वहाँ के वनवासियों के लिए तो यहाँ परिस्थिति प्रकृति में ऐसी रूची बसी है कि इसके बगैर वे जीवन की समरसता की कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रर्यटन की दृष्टि से यदि इस जनपद के प्रमुख स्थलों को विकसित कर दिया जाय तो विश्व के प्रर्यटन मानचित्र में सोनभद्र का नाम आदर से लिया जायेगा।

जनगणना 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में अनुसूवित जनजातियों की कुल संख्या 11,34,273 है जो कि प्रदेश की कुल जंनसंख्या (19,98,12,341) का 0.57 प्रतिशत है प्रदेश में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति की संख्या सोनभद्र (3,85,018) जिले में हैं जो कि जिले की कुल जनसंख्या का 20.67 प्रतिशत है। नयी सूचीबद्ध जनजातियों में एक पनिका (पंखा) जनजाति भी है। इसे कोटवार भी कहा जाता है, जिसकी जनसंख्या लगभग 35000 है। प्रस्तुत शोधपत्र उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद निवासी इसी पनिका जनजाति पर आधारित है। यह क्षेत्र मिर्जापुर मण्डल के अन्तर्गत आता है तथा इसका मुख्यालय रार्बटसगंज है।

अध्ययन पद्वति

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के अर्न्तगत दुद्वी तहसील में पायी जाने वाली पनिका जनजाति के चार गाँव के अध्ययन पर आधारित है। इन गाँवों के अध्ययन हेतु अवलोकन एवं साक्षात्कार पद्वति का सहारा लिय गया है। इनके सामाजिक व आर्थिक संगठन में आ रहे परिवर्तन के विस्तृत अध्ययन में वरिष्ठ, अनुभवी व सामाजिक कार्यकर्ताओं का योगदान अति महत्वपूर्व रहा है। जिनके प्रयासों से ही दुर्लभ गाँवों का

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

अध्ययन कर इस जनजाति की सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों में आ रहे परिवर्तन को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

पनिका शब्द की उत्पति

पनिका शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में कोई ऐतिहासिक प्रमाण तथा विचारों की एक मत्यता देखने को नहीं मिलती है। कुछ प्रमुख विद्वानों ने अपने–अपने तरीके से विश्लेषित करने का प्रयास किया है। हसन (1989 : 88) ने पनिका शब्द की उत्पति 'पणिक' अर्थात एक झुकाने वाला धनुष' शब्द से लिया जाता है जिसे बुनाई के समय कपड़ा बढ़ाने के लिए बढ़ाते है। केसरी (1983 : 100) के अनुसार पनिका शिल्पी वर्ग की जनजाति है जिसका पारंपरिका ,पैतृक व्यसाय सूत्र से कपड़े बनाना रहा है। गाँधी जी ने सूत्र कातने का चरखा इन्हीं लोगों से प्राप्त किया था। मजूमदार (1960 : 27) के अनुसार इनका परम्परागत व्यवसाय कताई–बुनाई रहा है। सोनकर (2006 : 35) के अनुसार पनिका जनजाति पनिखा, पंखा तथा कोटवार नाम से भी जानी जाती है पनिका लोग पंखा बनाने और बेचने का काम करते है तथा दूसरों के लिए ये पानी की दुलाई का भी काम करते है जिस कारण इनका नाम पनिका ,पंखा एवं पनिखा पड़ा। अतः स्पष्ट है कि पनिका शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विचारों का एक मत नहीं है फिर भी पंखा बनाने व दूसरों के लिए पानी की ढुलाई का काम ही इनके नाम की उत्पत्ति का कारण ही सर्वाधिक प्रमाणित प्रतीत होता है।

सामाजिक संगठन

यहाँ के मूल निवासियों–वनवासियों की वेशभूषा अन्य जनपद वासियों की अपेक्षा अलग–थलग है। स्त्रियां किनारादार साड़ी गोटेदार बंड़ी चुन्नरदार लहंगा की जगह अब सिन्थेटिक की साड़ियाँ टेरीलिन टेरीकाट का ब्लाउज और उसी का लहंगा पहनने लगी है। पुरूष भी मारकीन की अधटंगी धोती कुर्ता और बंडी की जगह पैंट शर्त पायजामा पहनने लगे हैं। वैसे पुरानी परम्परा के मानने वाले अभी भी परम्परागत वस्तु ही पहनते है महिलायें चाँदी गीलट या एल्युमिनियम का बना कड़ा छड़ा व पायल पैरों में पहनती हैं। कुछ महिलायें हाँथ की उँगलियों में अगूँठी भी पहनती है।

अन्य जनजातियों की तरह पनिका जनजाति ने भी हिन्दू विवाह पद्वति को अपना लिया है। इनके शादी की तिथियाँ वे ही होती है जो कि हिन्दुओं की। यह जनजाति भी अन्तर्विवाही जाति समूह वाली होती है और अनेक वर्हिविवाही गोत्र समूहों में विभक्त हैं। पहले इनके यहाँ लड़का पक्ष लड़की खोजता था तथा शादी का प्रस्ताव लड़के पक्ष की ओर से लड़की पक्ष के सम्मुख रखा जाता था और आज भी कुछ अशिक्षित लोग शादी के सम्बन्ध में प्राचीन परम्पराओं को मान्यता देते है। लेकिन अब वर्तमान समय मे शिक्षित व जागरूक पनिका परम्परा से हटकर कन्या मूल्य लेने के बजाय वर–मूल्य स्वरूप दहेज दे रहे हैं।

पनिका जनजाति के लोग हिन्दुओं के देवी–देवताओं एवं व्योहारों को मानते हैं लगभग प्रत्येक गाँव में शिव का मन्दिर पाया जाता है। यदि मन्दिर नहीं होता है तो पीपल या किसी पेड़ के नीचे शिवलिंग या पिण्डी रखकर पूजा करते हैं। ये मुख्यत काली, दुर्गा, दूल्हा देवी और ज्वालामुखी देवी की पूजा करते हैं। इनके बहुत से रीति–रिवाज भी हिन्दुओं के रीति–रिवाज से मिलते हैं। पहले ये अपने रोग संताप के निवास हेतु ओझाओं द्वारा झाड़–फूक कराते थे और यह ओझा अक्सर बैगा जनजाति का होता है, जो पुजारी और ओझा दोनों का कार्य करता है। लेकिन वर्तमान समय में झाड़–फूक व ओझाई इलाज शिक्षित व जागरूक व्यक्ति नहीं कराते है बल्कि आधुनिक चिकित्सा के द्वारा इलाज करवा रहे है (आदिवासी जीवन : 103) ।

अन्य जनजातियों की तरह पनिका लोग भी कला और नृत्य प्रेमी होते है। नृत्य में करमा नृत्य यहाँ विशेष रूप से प्रचलित है। ये लोग विवाह और उत्सव में करमा नृत्य नाचते और गाते हैं जिसमें युवक व युवतियाँ दोनों ही भाग लेते है। आँगन में एक करम (कदम्ब) की डाल गाड़कर उसी की परिक्रमा करते हुए रात भर तथा दूसरे दिन धूप निकलने तक गाते व नाचते रहते हैं। कभी–कभी ये लोरिकी, बिरहा, व करमा आदि का आयोजन भी कर

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

लेते हैं। इनका मुख्य वाद्य है मादल । मादल का स्वर जब गूँजता है तो लगता है, ये सारे दुख–दर्द भूल जाते है।

ये लोग अपने आपसी वादों–झगड़ों का निपटारा जातीय पंचायतों द्वारा करते है। ये पंचायतें शक्तिवान होती है जिनके निर्णय सर्वमान्य होते है। इन पंचायतों में बड़े–बूढ़े लोगों का विशेष महत्व होता है। इन पंचायतों में विभिन्न प्रकार के पारिवारिक व सामाजिक वादों का निपटारा होता है। बिरादरी के मुखियाँ का इन बिरादरी पंचायतों में वर्चस्व होता रहा है, किन्तु अब बदलते परिवेश में इनकी पंचायतों में शिथिलता पायी जा रही है। अब ज्यादातर लोग इन परम्परागत पंचायतों में विश्वास न करके मुकदमा व पुलिस के द्वारा निपटारा करवा रहे है।

पनिका हिन्दू धर्म को मानते हैं तथा इनकी भाषा भी हिन्दी है। इनके परिवार संयुक्त व एकाकी प्रकार के पाये जाते है। पनिका द्रविड़ प्रजाति के है तथा श्याम वर्ण होता है। इस जनजाति की महिलाओं को उत्तराधिकार का अधिकार नहीं है यद्यपि इन्हें समाज में समानता प्राप्त है ये महिलायें विभिन्न कार्यों में संलग्न पायी जाती है जैसे–कृषि कार्यों, पशुपालन, मत्स्य पालन, लकड़ी या ईधन इकट्ठा करने पीने योग्य पानी लाने मे तथा अन्य सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में समान भागीदारी होती है। इस जनजाति की ग्यारह शाखाएँ (गोत्र) पायी जाती है–बिरगेट, चिकौजिया, गैगोएर, कुमरिया, कोरवा, मोरई, पनेरिया ,पोरवार, रटिया, सरिमा और सुनयनी। पनिका अपने नाम के अन्त में प्रायः पनकिया पनिका एवं पंखा लिखते है जैसे–राम प्यारे पनिका, सत्य प्रकाश पंखा आदि।

आर्थिक संगठन

पनिका शिल्पी वर्ग की जनजाति है जिसका पारम्पारिक पैतृक व्यवसाय सूत से कपड़े बनाना रहा है। वैसे भी ये तीर–कमान से जंगली जानवरों का शिकार करके या खेती–मजदूरी करके अपनी जीविका चलाते रहे है। सरई–महुआ चकवड़ ,साग–पात कन्दमूल फल पर इनकी जिंदगी टिकी हुयी थी। पनिका प्रारम्भ में कपास की खेती करते थे। उससे रूई पैदा करते और अपने हाथ के बनाये चरखे पर सूत कातकर ताना–बाना करके मोटे सूती कपड़े तैयार करते थे। आज भी इनके हाथ का कपड़ा स्थायीय बाजारों में उपलब्ध हो जाता है।

अधिकतर पनिका भूमिहीन होते हैं और अपने रहने तक के लिए इनके पास भूमि नहीं होती है और आज भी कुछ पनिका तो बधुआ श्रमिकों का जीवन जीने पर विवश होते है और जिनके पास कुछ भूमि है वे उस पर खेती करते है। कुछ लोग दूसरों के खेतों में हलवाही करते है या मालिकों के पशु चराते हैं। पशुओं में भेड़, बकरी, गाय, सुअर, भैंस, मुर्गा, मुर्गी आदि मुख्यता पालते है। इनकी कृषि भूमि प्रायः असिंचित होती है जिस पर कम उपज होती है। इनके आनाजों में सांवां कोदों, अरहर, उड़द मटर, चावल गेहूँ जौ, मूँगफली, मक्का, चना आदि का उत्पादन होता है तथा हरी सब्जियों में आलू, लौकी, तोरई, भिंड़ी कटहल, पालक मूली, धनिया, हरीमिर्चा का उत्पादन दिया जाता है। आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण इनका भोजन बड़ा सादा और रूखा सूखा होता है। जंगल में महुआ–डहुआ बीनते थे। और उसे पकाकर खाते थे। कन्दमूल जो उपलब्ध हुआ करते, उसी को खाकर काम चलाते थे लेकिन वर्तमान समय में ये दाल चावल, रोटी, सब्जी, मक्का, मछली, आदि विविध प्रकार के खाद्यान्न का उपयोग कर रहे है (उत्तर भारत की आदिम जातियाँ : 37) ।

पनिका एक मिश्रित अर्थव्यवस्था वाली आत्मनिर्भर जनजाति रही है पहले यहाँ की पनिका जनजाति कपास की खेती करके उससे बारीक तथा मोटे वस्त्र तैयार करती थी। उनका अपना चरखा और ताना–बाना था, बनवासी सेवा आश्रम पद्धति सहित कुछ प्रतिष्ठान ही बचे है जिनमं कपड़े बनाये जाते है और खादी ग्रामों उद्योग ,द्धारा इनकी बिक्री की जाती है। इसके अतिरिक्त पनिकाा महुआ से शराब बनाने की कला जानता है और अपने उपयोग के लिए वह इसे बनाता रहता है । महुआ और सरई इनके अकाल–दुकान का मुख्य आजीविका रहें है ऑवला, हर्रा, बहेड़ा , तथा अन्य अनेक जड़ी बूटियों की पहचान भी यहाँ के आदिवासियों को रहती है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

पनिका के बदलते प्रतिमान

पनिका जनजाति की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने से विदित होता है कि इनकी सम्पूर्ण संस्कृति निरन्तर बदलती जा रही है और इनमें आ रहे परिवर्तन का मुख्य कारण संचार एवं आवागमन के साधनों का समुचित विकास एवं नवीन उद्योग धन्धों की स्थापना के साथ–साथ इनका अन्य लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित होता जा रहा है। यद्यपि अभी इनमें शिक्षा एवं जागरूकता का स्तर बहुत निम्न है, फिर भी इनकी नवीन पीढी में शिक्षा के प्रसार एवं औद्योगिक विकास ने इन लोगो को विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश पाने योग्य बना दिया है। बाहरी दुनिया से अधिक प्रभावित होने के कारण ये लोग अपनी प्राचीन परम्पराओं का धीरे–धीरे त्याग कर रहें है। बाह्य सम्पर्क के परिणाम स्वरूप ही इनकी जनजातीय संस्कृति, धर्म ,कला, सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे है।

इनमें शिक्षा का स्तर बहुत निम्न होने के कारण ही इनकी आर्थिक दशा ठीक न होने का एक मुख्य कारण रहा है यद्यपि शैक्षिक विकास हेतु इनके क्षेत्र में सरकार ने अनेक आश्रम पद्वति विद्यालय खोले है किन्तु अधिकतर परिवारों की आर्थिक दशा ठीक न होने के कारण इनक बच्चे स्कूल जाने के बजाय अपने परिवार के भरण–पोषण व जीविको पार्जन हेतु अन्य कार्यो में संलग्न है। इनकी आर्थिक दशा सुधारने हेतु सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का लाभ भी इन्हें समुचित नहीं मिल पा रहा है, क्योंकि शिक्षा व जागरूकता की कमी इनके सँर्वागींण विकास में सबसे बड़ी बाधा है। फिर भी इस जनजाति का शहरीकरण औद्योगीकरण व सरकारी नौकरियों में इनका प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है।

क्षेत्र अध्ययन व जन सम्पर्क के आधार पर विदित होता है कि जागरूक व शिक्षित सदस्यों के परिवार ही विकास के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं तथा अशिक्षित व अनभिज्ञ परिवारों में सरकारी योजनाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। और न ही उनका विकास हो पा रहा है, फिर भी पूर्व की तुलना में इनमें जागरूकता निरन्तर बढ़ रही है।

अतः स्पष्ट है कि अब अधिकतर पनिका अपने परम्परागत व्यवसायों पर ही आश्रित न होकर अनेक व्यवसायों कार्यो व नौकरियों को अपना रहे हैं और समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल अपने अस्तित्व को बनायें रखने हेतु दिन–प्रतिदिन निरन्तर परिवर्तन की और अग्रसर है।

सन्दर्भ–स्रोत

1. केसरी,डॉ.अर्जुनदास , 2009 *विन्ध्यांचल मण्डल समग्र,* रार्वटसगंज, यू.पी., लोकरूचि प्रकाशन
2. क्रुक विलियम, 1896, *द ट्राइब्स एण्ड़ कास्टस ऑफ द नार्थ वेस्टर्न इंडिया।*
3. केसरी ,अर्जुनदास 1983, *आदिवासी जीवन,* लोकरूचि प्रकाशन रावर्तसगंज, यू.पी.।
4. गुप्ता, रमणिका, 2007 *आदिवासी लोक,* अंश प्रकाशन, गाँधी नगर, दिल्ली।
5. मजूमदार, डी.एन. 1965, *छोर का एक गाँव* : नई दिल्ली, एशिया पब्लिसिंग हाउस।
6. सोनकर, आर.डी. 2006 *उत्तर की आदिम जातियाँ,* प्रकाशन केन्द्र ,लखनऊ।
7. सिंह, के.एस. 2005, *प्यूपल ऑफ इंडिया* : उत्तरप्रदेश, नई दिल्ली, मनोहर पब्लिशर (एन्थोपॉलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया)
8. हसन, अमीर, 1989 *उत्तर प्रदेश की जनजातियाँ,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिसिंग हाउस।
9. उत्तर प्रदेश, जनसंख्या– 2011 से प्राप्त ऑकड़े।